हुसर्ल : मनोवैज्ञानिकता की आलोचना MA Sem 4

हुसर्ल फिनोमेनोलॉजी में चेतना का विश्लेषण करते हैं।चेतना मनोविज्ञान का विषय है। किंतु हुसर्ल फिनोमेना का अध्ययन जिस दृष्टिकोण से करता है वह मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से भिन्न है हुसर्ल के अनुसार मनोविज्ञान केवल मानसिक स्थिति की व्याख्या में नहीं लगा है बल्कि दर्शन और विज्ञान के भी मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करने में लगा है। ऐसी स्थिति में फिनोलॉजी का जो उद्देश्य तटस्थ और वस्तुनिष्ठ व्याख्या करना है वह समाप्त हो जाएगा हुस्सर्ल यह भी मानते हैं भी मानते हैं कि मनोविज्ञान प्रकृतिवाद से प्रभावित होकर विभिन्न विषयों की व्याख्या करता है। यही कारण है कि हुस्सर्ल इस मनोवैज्ञानिकवाद की आलोचना करते हैं। उनकी आलोचना के निम्नलिखित बिंदु है:-

1. मनोवैज्ञानिक व्याख्या एकांगी होती है। मनोवैज्ञानिक व्याख्या निश्चित दृष्टि से की गई व्याख्या होती है। चूंकि मनोविज्ञान की यह पूर्व मान्यता है कि प्रत्येक अनुभव मनोवैज्ञानिक तथ्यों से संरक्षित है। अतः इस दृष्टि से की गई व्याख्या सार्वभौमिक नहीं हो सकती। वह अवश्य ही एकांगी होगी। ऐसी स्थिति में सार्वभौम,तटस्थ और वस्तुनिष्ठ व्याख्या की संभावना नहीं रह जाती।

2. मनोवैज्ञानिकता में पुनरुक्ति दोष है- तर्कशास्त्र एवं गणित जैसे वस्तुनिष्ठ शास्त्रों को मनोवैज्ञानिक तत्वों पर ढालने के प्रयत्न में पुनरुक्ति दोष चले आते हैं। इस व्याख्या की सामान्य प्रणाली यही है कि कुछ मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत विषय के संबंध में कुछ अनुमान किया जाता है। किंतु ऐसी किसी व्याख्या के लिए यदि अनुमान आवश्यक है तो इस व्याख्या को भी अनुमान के नियमों पर आधारित मानना पड़ेगा। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक व्याख्या को भी अनुमान के नियमों को स्वीकार कर ही अग्रसर होना है। किंतु तब तो इससे तार्किकता की प्राथमिकता सिद्ध होती है मनोवैज्ञानिकता की नहीं।

3. मनोविज्ञान विज्ञान का अनुकरण करता है- मनोविज्ञान अपने निष्कर्षों को वस्तुनिष्ट बनाने के लिए विज्ञान मूलतः भौतिकी की नकल करता है। मनोवैज्ञानिकता का यह सबसे बड़ा दोष है कि वह मानसिक दशाओं की स्थूल दशाओं में अर्थात स्थूल व्यवहारों में परिवर्तित करता है। इस प्रकार वह मनोविज्ञान को विज्ञान बनाने का प्रयत्न करता है। हुस्सर्ल कहते हैं कि ऐसे नकल से उसके निष्कर्षों में निश्चितता नहीं आ जाएगी क्योंकि विज्ञान के ही निष्कर्ष - भौतिकी के भी पूर्णतया निश्चित नहीं होते। वस्तुनिष्ठता तो प्रमाणों से आती है और जब तक स्वतःसिद्ध प्रमाण नहीं प्राप्त हो जाते तब तक निश्चितता और वस्तुनिष्ठता नहीं आ सकती। यदि ऐसा साक्ष्य उपलब्ध हो जाए जो स्वतः सिद्ध भी हो तथा पूर्णतया वस्तुनिष्ठ भी तो सभी ज्ञान विज्ञान को वस्तुनिष्ठ आधार मिल जाएगा और यही तो फेनोमेनोलॉजी की खोज है।

4. मनोगत अनुभव वस्तु रूप नहीं है- मनोवैज्ञानिक का अन्वेषण विषय विज्ञान अथवा भौतिकी के अन्वेषण विषय से सर्वथा भिन्न है

मनोविज्ञान जीवित मनुष्य की क्रियाओं प्रतिक्रियाओं का अन्वेषण करता है। मनुष्य उद्दीपन पर यंत्रवत प्रतिक्रिया नहीं करता अपितु वह उद्दीपन को भी अपने ढंग से पहचान कर उसके अनुरूप प्रतिक्रिया करता है। विज्ञान की नकल करने के क्रम में मनोविज्ञान यह भूल जाता है कि उसका अध्ययन विषय कोई जड़ तत्व नहीं है।हुस्सर्ल इसे मनोवैज्ञानिकता की बडी भूल बताते हैं।

5. मनोविज्ञान मानव चेतना का तात्विक अन्तर्दृष्टि से अन्वेषण नहीं करता- हुसर्ल का सिद्धांत है मानव चेतना को तात्विक रुप से ग्रहण करना।मनोविज्ञान चेतना की व्याख्या उद्दीपन, स्नायु-क्रिया,मांसपेशियों की हरकतें, साहचर्य क्रिया जैसे मनोवैज्ञानिक तत्वों के आधार पर चेतना का सामान्यीकरण कर करने का प्रयास करता है।

अतःअन्य सामान्यीकरणों की तरह संशय से परे नहीं है।

6. प्रमाण स्वतःसिद्ध होते हैं। मनोविज्ञान प्रमाण के रूप में रुचि, आस्था, विश्वास, भावना आदि तत्वों को मानता है। हुस्सर्ल के अनुसार यह प्रमाण नहीं हो सकते। उनके अनुसार यह तो मानसिक अवस्थाएं हैं और परिस्थिति विशेष पर निर्भर होती हैं।

इनके द्वारा प्रामाणिक व्याख्या की संभावना समाप्त हो जाती है। हुस्सर्ल मानते हैं कि निष्पक्ष चिंतन के लिए हमें भावों और विचारों से बचना चाहिए क्योंकि इसमें पक्षपात की संभावना होती है। उनके अनुसार चिंतन में तो हमें चेतना के मूल तत्व रूप को पकड़ना होता है जो फिनोमेनोलॉजी के द्वारा ही संभव है मनोवैज्ञानिकता के द्वारा नहीं।

समाप्त